रात्रि क्लास 10-11-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चों को मालूम है मनुष्य जो भी सुनाते हैं वह किचड़ा। इसलिये भगवान कहते हैं हियर नो किचड़ा, सी नो किचड़ा, टाक नो किचड़ा। कोई भी क्या2 सुनाते हैं। है तो मनुष्य के ना। तुमको तो सुनाने वाला निराकार परमपिता परमात्मा है। तुम सुनते हो धारण करते हो औरों को सुनाते हो। बाप ने सुनाया है यह भक्ति मार्ग का किचड़ा न सुनो। सुनाने वाले मिलते हैं तो सुनना भी है परन्तु सुनते हुये भी न सुनो। जानते हैं तमोप्रधान बातें ही सुनावेंगे। तुम जानते हो हम जो कुछ सुनते हैं वह दूसरा कोई मनुष्य सुना न सके। सुनाने वाला एक बाप ही है। कहते हैं ब्रह्मा को भगवान कहते हो। बोलो नहीं। हम तो कहते हैं मनुष्य कब भगवान हो नहीं सकता। तुम ब्रह्मा को जानते नहीं हो। ब्रह्मा पतित है। झाड़ में देखो तमोप्रधान में खड़ा है। बहुत जन्मों के अन्त में, तो क्या हुआ। थोड़ा धीर से सुनो। हम ब्रह्मा को देवता भी नहीं कहते। न उनको भगवान ही कहते हैं। यह बाप समझाते हैं जिस में मैं प्रवेश किया है यह उनके बहुत जन्मों के अन्त का शरीर है। ब्रह्मा नहीं तो कहां से आये। यह पतित पावन बनते हैं तो देवता बनते हैं। हम भी पतित हैं तो और सारी दुनिया भी पतित हैं वैसे यह भी पतित हैं। बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है इनका। ब्रह्मा जरूर चाहिए जिस द्वारा ब्राह्मण एडाप्ट होते हैं। ब्राह्मण फिर देवता बनेंगे। मनुष्य समझते नहीं। उनको खड़ा होकर समझाना चाहिए। यह नम्बरवन पतित है। हमको श्रीमत मिलती है यह बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। सो तो पतित ठहरा ना। हम भी ब्रह्माकुमार-कुमारियां हैं। कुमार-कुमारियां कहने से क्रिमनल आई ठंढी हो जाती है। फिर भी बाप कहते हैं भाई2 समझो। तो शरीर का भान न रहेगा। कलियुग में सभी है तमोप्रधान मनुष्य। परन्तु मनुष्य अपने को तमोप्रधान समझते थोड़े ही हैं। तुम हो अब संगम युग पर। चित्र ले जाना चाहिए। झाड़ में कितना क्लीयर है। कोई भी सन्यासी हो, बड़ा गुरु हो। फिर मनुष्य ठहरा ना। हठयोग को भी भक्ति कहेंगे। आधा कल्प है ही भक्ति कल्प। भक्ति से दुर्गति। मनुष्यों को तो कुछ भी ज्ञान है नहीं। सभी तमोप्रधान हैं। तुम बच्चे जानते हो ब्राह्मण ही रूहानी बच्चे हैं। जो कुछ भी सुनाते हैं वह मनुष्य ही सुनाते हैं। शास्त्रों का ज्ञान सुनाते हैं। कुछ न कुछ अपनी मत से सुनाते हैं। वह है ही मनुष्यमत। तुम्हारी है ईश्वरीमत। सदगति के लिये मत सिर्फ एक बाप के पास ही होती है। वैसे भल कितने भी हैं फिर भी शुद्र सम्प्रदाय पतित हैं। वैश्यसम्प्रदाय भी नहीं हैं। भल व्यापारी धन्धा करते हैं परन्तु वैश्य कुल का नाम हो जाता है. कलियुग में है ही शुद्र। पहरा हो सारा कलियुग का है। सभी हैं शुद्र सम्प्रदाय। इस ज्ञान को मनुष्यनहीं जानते हैं। तुम अभी अपने को मनुष्य नहीं रूह समझते हो। बाप हम आत्माओं को सुनाते हैं। तुम समझते हो ईश्वर सर्वव्यापी होता नहीं। आत्मा सभी है उस आत्मा में फिर सर्वव्यापी विकार है। तो यह बाप ही समझाते हैं। मनुष्य की बातें सुनते हैं पर ध्यान नहीं। बाबा कब ध्यान से सुनते नहीं। सुनते हुये जैसे कि नहीं सुनते हैं। सुनने से कोई फायदा है नहीं। फायदा सुनना है। फिर भी बच्चे आते हैं। सुनते आये हैं जैसे सुना नहीं। इसलिये फिर सुनाने आता ही नहीं। बाप के संग में वह स्मृति कम हो जाती है। नशा रहता है हम बहुत ऊंच गवर्मेन्ट हैं। हम गवर्मेन्ट से जमीन लेवें। अपील करें। अच्छा नहीं लगता। तुम किसके बच्चे हो। उन से जमीन का टुकड़ा भी क्यों मांगते हो। हम विश्व के मालिक के बच्चे हैं। सभी कुछ हमको बाप से मिलता है। जमीन आदि की बात भी बाबा को आखिर में नहीं आती। विनाश होने वाली गवर्मेन्ट से हम क्या मांगें। उनको हम रजिस्टरी करावें, आखिर में ही नहीं आता। बन्दरों से जमीन मांगें। खुद भीख मांग रहे हैं। उन से हमारे बच्चे जमीन मांगें। जोर से नशा आ जाता है। जितना नजदीक उतना ही नशा चढ़ता है। हम तो पाण्डव गवर्मेन्ट हैं। वह है कौरवगवर्मेन्ट। विनाश काले विपरीत बुधि है। अखबार आदि में कितना डालते हैं। तुम पेपर लिख दो। तुमने तो पूजा की है थैंक यू मेरी मुच। बस। दिल को कोई चोट नहीं लगनी चाहिए। सुना जैसे किन सुना। तो चोट क्या लगे। [illegible] जो होना है। ड्रामा। पुरुषार्थ तो करना ही है। ऐसे गोदरेज —

ड्रामा कह बैठ जावेगा। बच्चों को नशा रहता है बाबा हमको पढ़ाते हैं। बाप तो नई दुनिया नई नालेज ही देते हैं। और कोई के पास यह नालेज होती ही नहीं। मनुष्य जो शूद्र हैं उनको भी जरा नालेज नहीं है। तुम ब्राह्मणों में भी नम्बरवार है। विकर्म होने से फिर वह धारणा भी खत्म हो जाती है। सुनते हैं चढ़ते हैं फिर फिर कुछ किया तो गिर पड़ते हैं। फिर उनकी वाणी में तासीर न रहता। जो दूसरे को कहेंगे देहीअभिमानी भव। खुद होगा ही नहीं। तो उनको पंडित कहेंगे। अपने को शरीर समझना बिल्कुल रांग है। यह है हो अनराईटियस दुनिया। वह है राईटियस दुनिया। वह है राईटियस दुनिया। इस समय है ही शूद्र वर्ण। एक भी और कोई है नहीं। न वैश्य है न ब्राह्मण है। न देवता। फिर तुम आकर ब्राह्मण बनते हो। बाप क्या समझाते हैं इस पर विचार सागर मंथन करना चाहिए। बहुत कहते हैं ब्रह्मा को तुम भगवानक्यों कहते हो। यह करते हो। और बाप खुद कहते हैं मैं पतित-शरीर में प्रवेश करता हूं। उनका जो गुस्सा हो वह ठंढा कराये देना चाहिए। मुझे प्रवेश उनमें करना है जो नम्बरवन पतित है। समझाने वाला भी अच्छा देहीअभिमानी होगा। वह समझा सकेंगे। देह-अभिमानी के पास धारणा होगी ही नहीं। इस समय जो तुम्हारी सर्विस चल रही है बिल्कुल एक्युरेट। यह ख्याल न आना चाहिए इतनी मेहनत को कोई निकला नहीं। क्यों नहीं सर्विस होती है। प्रजा बहुत बन रही है। तुम बहुत सर्विस कर रहे हो। अभी बच्चे अच्छी रीत सर्विस करते हैं। समझाने का शौक है। समझाने बिगर रह न सकेंगे। समझाने समय भी देहीअभिमानी होंगे तो थकावट भी न होगी। फिर गलाआदि घूटेगा नहीं। देहअभिमान होने से नाले आदि खराब हो जाते हैं। अभी तो सभी पुरुषार्थी हैं ना। बड़ा धीर से बैठ समझाना चाहिए। आज कल करते तो काल खा जावेगा। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

→ रात्रिक्लास 12-11-68 :-
***